موضوع الخطبة : **خصائص الشريعة الإسلامي – جزء7**

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:1

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त7

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए

नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वय ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के बत्तीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

33.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश करता है,यदि उसके पास बुद्धि हो तो अपने धर्म से नाराज व ऊब कर उससे नहीं फिरता,इस्लामी इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ,क्योंकि यह बात गुजर चुकी है कि इस्लामी शिक्षाएं बुद्धि एवं स्वभाव से मिलती जुलती हैं,वे मनुष्य की आध्यात्मिक एवं शारीरिक प्रत्येक प्रकार की आवशयक्ताओं

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

की पूर्ति करती हैं,अल्हमदोलिल्लाह तर्क सिद्ध हो गया और मार्ग उज्जवल हो गया।

34.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इसे चुनैती दे,यह उस पर प्रभावी हो जाती है,यही कारण है कि कोई व्यक्ति कुरान की किसी एक आयत अथवा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी एक ह़दीस को गलत सिद्ध नहीं कर सका,न ही कोई व्यक्ति कुरानी आयतों जैसी कोई एक आयत ही प्रस्तुत कर सका,कोई भी व्यक्ति ऐसी शिक्षाएं प्रस्त़ुत नहीं कर सकता जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं से निकटता एवं सादृश्य रखती हो,अल्लाह ने सत्य फरमायाः

(ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا)

अर्थातःयदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बह़त सी प्रतिकूल(बे मेल)बातें पाते।

35.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह अपने अनुयायियों के बीच न्याय करता है,अतःइस्लामी शिक्षाएं इस बात को सिद्ध करती हैं कि समस्त मानव एक ही पुरूष एवं स्त्री(आदम व हव्वा)से पैदा हुए हैं।वह एक

तराजू जो समस्त मानव के लिए मानक है वह तक़्वा(ईश्वर भक्ति)है,न कि रंग,अथवा समाजी अथवा भौतिकवादी स्थिति,अल्लाह तअ़ला ने फरमायाः

(يا أيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا إن أكرمكم عند

الله أتقاكم إن الله عليم خبير)

अर्थातःहे मनुष्या!हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर–नारी से।तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियॉ तथा प्रजातियॉ ताकि एक दूसरे को पहचानो।वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो।वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला सब से सूचित है।

36.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके मानने वालों को ही सहायता मिलती है,अल्लाह का कथन है:

(إنا **لننصر رسلنا والذين آمنوا** في الحياة الدنيا ويوم يقوم الأشهاد)

अर्थातःनिश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लोयें,संसारिक जीवन में,तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे।

37.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह क़यामत तक बाकी रहने वाली है,अतःमोआ़विया रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(मेरी उम्मत(समुदाय)में स्वेद एक समूह एसा होगा जो अल्लाह की शरीअ़त को लागू रखेगा,उन्हें अपमान अथवा उनके विरोद्ध करने वाले उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेंगी यहां तक कि अल्लाह का आदेश आजाएगा और वे हमेशा लोगों पर प्रभावी रहेंगे)[2]।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझ और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

[2] इसका संदर्भ गुजर चुका है।

38. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके अनुयायी समस्त क़ौमों से अच्छे हैं,अल्लाह का कथन है:

(كنتم **خير أمة** أخرجت للناس تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله)

अर्थात:तुम सबसे अच्छी उम्मत हो,जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो,तथा बुराई से रोकते हो,और अल्लाह पर ईमान(विश्वास)रखते हो।

बहज़ बिन ह़कीम *عن ابیہ عن جدہ* की सनद से वर्णित है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला के कथन:﴿كنتم خير أمة أخرجت للناس﴾ की व्याख्या करते हुए सुना:(तुम सत्तर उम्मतों का अनुपूरण

हो,तुम अल्लाह के निकट उन सबसे अच्छा और सबसे अधिक सम्मानित

हो)[3]।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

  (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बडा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।

---

[3] इस ह़दीस को तिरमिज़ी(3001),इब्ने माजा(4288),अह़मद(3/5)और बैहक़ी(5/9)ने वर्नण किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं और अल्बानी ने इसे ह़सन कहा है।

- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमार रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी